दिनांक : 16 फरवरी, 2014

क्या कांग्रेस संसद में लंबित विधेयकों में बाधा पहुंचाने के लिए जिम्मेदार है?

-अरुण जेटली
राज्य सभा में विपक्ष के नेता

पिछले सप्ताह संसद का सत्र आरंभ होते ही एक जायज सवाल पर चर्चा होने लगी–अनेक लंबित विधेयकों के पारित नहीं होने के लिए कौन जिम्मेदार है? कांग्रेस उपाध्यक्ष राहुल गांधी ने कल एक बयान दिया जिसमें उन्होंने कहा था कि भाजपा ने संसद में भ्रष्टाचार निरोधक विधेयक में अवरोध पैदा किया।

सच्चाई यह है कि यूपीए के 10 वर्ष के शासन की समाप्ति की ओर बढ़ते समय कांग्रेस कुछ विधेयक ले आई है। इस समय पार्टी संसद के दोनों सदनों में बहुमत खो चुकी है। इनमें से अधिकतर विधेयक और कुछ अन्य कानून जैसे रेहड़ी पटरी वालों को संरक्षण प्रदान करने या बुंडेलखंड में एक केन्द्रीय विश्वविद्यालय स्थापित करने संबंधी विधेयक को लेकर कोई विवाद नहीं हुआ। ये ऐसे कानून थे जिन्हें चर्चा के बाद पारित किया जा सकता था। विकलांग व्यक्तियों के अनेक संगठन उनसे जुड़े मुद्दों से निपटने के विधेयकों पर जल्द विचार करने और उन्हें पारित कराने की मांग कर रहे है। जिस तरह राहुल गांधी ने भ्रष्टाचार निरोधक कानून पारित नहीं होने देने के लिए कल भाजपा को दोषी ठहराया उसी प्रकार अन्य विधेयकों के सम्बन्ध में दूसरे लोग इसी तरह की दलीलें दे रहे हैं।

इस सम्बन्ध में तथ्यों को सामने लाने की जरुरत है। भाजपा इनमें से किसी भी विधेयक में रुकावट नहीं डालना चाहती। हम समर्थन देने के लिए तैयार है। भाजपा के एक भी सदस्य ने संसद के किसी भी सदन की कार्यवाही में बाधा नहीं पहुंचाई। भाजपा का कोई भी सदस्य सदन के बीचोंबीच नहीं गया। हम हर रोज सुबह संसद में आते है। दोनों सदनों की कार्यवाही में बाधा आंध्र प्रदेश के विभाजन को लेकर पहुंचाई गई जिस पर विचार–विमर्श की जरुरत है। लोक सभा अध्यक्ष और राज्य सभा के सभापति रोजाना संसद की कार्यवाही स्थगित कर रहे हैं क्योंकि इस माहौल में कार्यवाही को आगे बढ़ाना संभव नहीं है। बड़ी संख्या में कांग्रेस पार्टी के सदस्य रोजाना दोनों सदनों की कार्यवाही में बाधा डाल रहे हैं। मैं समझता हूं कि राहुल गांधी के पास न तो सदन में आने का समय है और न ही उनकी पार्टी के सदस्य जो हंगामा कर रहे हैं उसकी जानकारी प्राप्त करने के बारे में उन्हें कोई चिंता है। प्रमुख घोटालों जैसे 2जी स्पेक्ट्रम आबंटन, कोयला ब्लॉक आबंटन, राष्ट्रमंडल खेलों के आयोजन के बारे में उन्होंने कभी बात नहीं की, बड़ी देर बाद उन्हें अहसास हुआ है कि भ्रष्टाचार भारतीय राजनीति का एक प्रमुख मुद्दा है। इतनी देर में अहसास होने पर अपनी पीठ थपथपाने और इन विधेयकों को सरकार के कार्यकाल की समाप्ति पर लाने पर वाहवाही लूटने के बजाय, राहुल गांधी को अपने अंदर झांक कर देखना चाहिए और इस सवाल का ईमानदारी से जवाब ढूंढना चाहिए कि विधेयकों में बाधा क्यों आ रही है। क्योंकि कांग्रेस के अपने सदस्य ही बार–बार बाधा पहुंचा रहे हैं। इनमें इसलिए अड़चन आ रही है क्योंकि सरकार सदन में व्यवस्था बहाल करने में असमर्थ है। जिस क्षण राहुल गांधी को सच्चाई का अहसास हो जाएगा और उनकी पार्टी सुधारात्मक कार्रवाई करेगी, भाजपा को इनमें से अधिकतर विधेयकों का समर्थन करने में कोई दिक्कत नहीं होगी।

★★★★★